Artistic Narration, Vol. VIII, 2017, No. 2: ISSN (P) : 0976-7444 (e) : 2395-7247Impact Factor 3.9651 (ICRJIFR)
UGC Approved Journal No. 43285

अमूर्तन ही आधुनिक कला है

डॉ० दिशा दिनेश

अंशकालिक प्रवक्ता, चित्रकला विभाग, आई0 एन0 पीजी कालिज, मेरठ

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० दिशा दिनेश,
अमूर्तन ही आधुनिक कला है,
Artistic Narration 2017,
Vol. VIII, No.2, pp.45- 49
http://anubooks.com/?page_id=485

सारांश

अमूर्तन 20वीं शताब्दी के आत्मिक और सामाजिक संघर्ष के बदलाव का परिणाम है इस शताब्दी में मनुष्य ने हर दिशा में तेजी से बदलते मूल्यों और सन्दर्भो में क्रान्तिकारी परिवर्तनों से साक्षात्कार किया है। कला की अभिव्यक्ति, व्यक्ति और समाज की आशाओं, आकांक्षाओं और क्षणिक समर्थताओं का एक सजीव और गतिशील दर्पण है। जन–मानस की एक बड़ी अवधारणा यह है कि जो समझ में न आये वह अमूर्तन ही आधुनिक कला है। चित्रकला अब यथार्थ न रहकर काल्पनिक चित्रण की ओर अग्रसर होने लगी है। अब ज्यादातर आधुनिक चित्रों में विषय नहीं होता, कहानी नहीं होती, यहाँ तक की कोई ऐसी चीज नहीं होती, जिसको हमने पहले कभी देखा हो या पहचान सकें। कला सदैव अमूर्तता से सम्बन्धित रही है, क्योंकि वह कलाकार के अमूर्त भावों की अभिव्यंजना होती है। अमूर्तवादी एवं वस्तु निरपेक्ष चित्रकारों ने ऐसी चित्र रचनाएं रची हैं जो चित्र की स्वतंत्र एवं स्वायत्त सत्ता का हमारे सामने नये चाक्षुकीय एवं दृश्य प्रभाव प्रस्तुत करती है यहीं आधुनिक कला की परिणति है।

अमूर्तन ही आधुनिक कला है

डॉ0 दिशा दिनेश

अमूर्तन 20वीं शताब्दी के आत्मिक और सामाजिक संघर्ष के बदलाव का परिणाम है इस शताब्दी में मनुष्य ने हर दिशा में तेजी से बदलते मूल्यों और सन्दर्भो में क्रान्तिकारी परिवर्तनों से साक्षात्कार किया है और रचनाधर्मिता में निरन्तरता कायम रखते हुए अनेक पक्षीय द्वन्दों को उजागर किया है। विज्ञान और औद्योगिकरण से सामाजिक वातावरण में बदलाव आया है और यान्त्रणीकरण में कला की भाषा और स्वरूप में बदलाव का गहरा छाप छोड़ा है। एक ओर कलाकार वैज्ञानिक अनुसंधानों से प्रभावित नाना प्रयोग में रूचि लेता है, तो दूसरी ओर चित्रकारी में आत्मिक सन्तुष्टि और प्रसन्नता मिलती है। शोपेनहोर ने लिखा है "सभी कलाऐं संगीत की ओर प्रवृतित है।"[1] इस विचार ने आधुनिक कलाकारों को संगीत कलाकार के मनोभाव, विचार, चिंतन का प्रतिफल है, जिसका विश्लेषण मनोवैज्ञानिक रूप से हो सकता है और कला के अर्न्तनिहित को समझा जा सकता है, आत्मिक मूल्य के प्रति जागरूकता के कारण ही कलाकार अमूर्तन की ओर आकृष्ट होता है जिससे अनुभूति को त्वरित गति से धरातल पर प्रस्तुत किया जा सके। वस्तु के आन्तरिक गुणों को आत्मसात् करके कलाकार रंग, रूप, रेखा द्वारा सारभूत अस्तित्व को प्रकट करने में संलग्न हो जाता है। यूँ तो प्रत्येक युग की कला तत्कालीन आधुनिक रही है, इसलिए आधुनिक कला को किसी दायरे में सीमित नही किया जा सकता। आज आधुनिक कला से तात्पर्य समकालीन कला का है। कलाकार की बुद्धि कल्पना तथा नये प्रयोगों का कला के रूप में प्रस्तुती व्यक्ति विशेष की पहचान और शैली वैविध्य को दर्शाता है।

कला की अभिव्यक्ति, व्यक्ति और समाज की आशाओं, आकांक्षाओं और क्षणिक समर्थताओं का एक सजीव और गतिशील दर्पण है। इस दर्पण में हम अपनी प्रतिमूरत देखते नहीं–पहचानते और समझते है इस समझ की प्रतिमूर्ति स्वरूप विविध प्रकार के बिम्ब मानस पटल पर उभर कर कलाकार की अभिव्यक्ति को सम्बल प्रदान करते हैं।

आज विभिन्न कलाएँ और ज्ञान–विज्ञान निरंतर एक दूसरे से टकराते एक–दूसरे में घुलते–मिलते एक दूसरे की सीमाओं को बनाते–मिटाते, सिकोड़ते–फैलाते हुए आगे बढ़ रहे हैं।

यदि प्लेटों आज जीवित होते तो शायद अमूर्त कला को अपने दिव्य लोक में सर्वप्रथम एवं उच्च स्थान देते। परन्तु भारतीय जन–मानस में जितना अर्मूतन ने विवाद व भ्रान्तियाँ उत्पन्न की उतना शायद किसी अन्य कला धाराओं ने जनमानस को इतना दिग्भ्रमित नहीं किया। जन–मानस की एक बड़ी अवधारणा यह है कि जो समझ में न आये वह अमूर्तन ही आधुनिक कला है।[2] अमूर्त का विधान लेने वाली कला खास तौर से हमारे मन के आंतरिक सत्य के जितना निकट होती है उतना .... उस ठंग से ... मूर्त यानी साफ सीधी सामने नजर आने वाली सच्चाई नहीं होती क्योंकि हम अपनी भावनाओं में बहुत कुछ अपने अन्दर का ही जीवन जीते हैं। प्रत्यक्ष प्रस्तुत होने वाली वस्तु को देखते हुए हम वास्तव में उसको देखते नहीं बल्कि अपने अन्दर की चेतना से पकड़ते हैं और जिस रूप में हम सामने नजर आने वाली चीज को पकड़ते हैं वह रूप हमारे मन और मस्तिष्क के लिए ज्यादा पहचाना होता है। वास्तविकता तो यह है कि वही रूप हमारे जीवन पर असर छोड़ता है। इसीलिए जब कलाकार उस सामने नजर न आने वाली अन्दर की छाप को हमारे सामने लाता है, तो हमें स्वयं अपनी छिपी हुई चेतनाओं से अधिक परिचित कराता है।

यथार्थ वह है जो हमारे अन्दर है जो शब्दों में नहीं बांधा जा सकता क्योंकि शब्दों में आकर तह

बदल जाता, गलत सा हो जाता है और अपना पूरा मतलब खो देता है। आन्तरिक सौन्दर्य को अमूर्त रूपाकारों में अभिव्यक्त करने की तीव्र इच्छा ने वस्तु के बाह्य तत्व और सादृश्य को निर्वासित करके उसकी भीतरी स्वरूप और गुण को अमूर्तन के द्वारा उद्घाटित किया। इसी चिंता धारा से प्रेरित होकर कांदिस्की ने 1910 में अमूर्त चित्र की रचना करके तत्कालीन दर्शकों को अवाक् कर दिया। यह चित्र वस्तुनिरपेक्ष रचनाधार्मिता के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। इसी समय कांदिस्की के अमूर्तन सम्बन्धी विचार पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुए जिसमें बार–बार कहा कि केवल अमूर्त रूपाकारों की भाषा द्वारा ही कलाकार अपनी हृदयगत भावनाओं को अभिव्यक्त कर सकता है। समकालीन कला ने चाक्षुष विषयवस्तु को अभिव्यक्त करने की अभिलाषा से मुक्ति पाने की चेष्टा की है। संगीत की तरह अमूर्त कला भी किसी विषय की व्याख्या ही करती कोई कहानी नहीं कहती। यह आत्मा के उस असंप्रेषित पक्ष को उजागर करती है। जहां संकेत आकार बन जाते हैं। जहाँ विचार आकर बन जाते हैं। आज का कलाकार किसी एक कृति में स्वयं को अभिव्यक्त नहीं करता उसकी कृतियाँ उसी निरंतरता का अंग है जो किसी संगीत रचना की तरह समय के साथ चलायमान होती रहती हैं। आज का कलाकार इस निरंतरता में अपनी अमूर्तन शक्ति और बुद्धि के माध्यम से आगे बढ़ रहा हैं।

आज संसार भर में अरूप कला या अमूर्त कला का प्रचार हो गया है। वर्तमान समय का शायद ही कोई चित्रकार हो जो इस नयी चेतना से प्रभावित न हुआ हो। भारत वर्ष में करीब–करीब सभी नये चित्रकारों का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है। सूक्ष्म–चित्रकला इस सदी की एक बहुत ही प्रभावोत्पादक देन है। यह सच है कि साधारण मनुष्य इसका आनन्द लेने में असमर्थ है और इन्हें देखने पर भौं–नाक सिकोड़ता है। बात ठीक भी है सूक्ष्म–चित्रकला से प्रभावित चित्रों की सींग–पूछ पहचानना बड़ा मुश्किल हैं।

चित्रकला अब यथार्थ न रहकर काल्पनिक चित्रण की ओर अग्रसर होने लगी है। अब ज्यादातर आधुनिक चित्रों में विषय नहीं होता, कहानी नहीं होती, यहाँ तक की कोई ऐसी चीज नहीं होती, जिसको हमने पहले कभी देखा हो या पहचान सकें। कल्पना मनुष्य की वह शक्ति है जिसके आधार पर नये संसार की सृष्टि हो सकती है। कल्पना आधार पर ही हमारी प्रगति हुई है और आगे भी होगी। इस प्रकार चित्रकार ने अपनी कला के द्वारा आँखों देखी चीजों या दृश्यों का वर्णन करना छोड़कर कला के द्वारा अपने सूक्ष्म अनुभव–जन्य सत्य का चित्रण करना आरम्भ किया। चित्रकार अब किसी वस्तु का चित्र नहीं बल्कि रंग, आकार तथा रेखाओं के माध्यम से वही करने का प्रयत्न करता है जो सृष्टि अपने अनेक साधनों से करती है।

आधुनिक सूक्ष्मवादी चित्र इस समय साधारण रूप में पहेली से जान पड़ते हैं। यह तो समझ में आ सकता है कि आधुनिक चित्रकार बहुत ही ऊँचे विचारों से प्रभावित होकर चित्र रचना कर रहे हैं, और जो कुछ वे कर रहे हैं उचित मार्ग पर है। परन्तु उनके चित्रों में साधारण मनुष्य को या अधिकतर लोगों को कोई आनन्द नहीं आता। यह आधुनिक चित्र केवल विभिन्न प्रकार के रूप उपस्थित करते हैं। चित्रों के इतने विविध रूप पहले देखने को नहीं मिलते थे। अनेकों प्रकार की शैलियाँ देखने को मिलती है, परन्तु इसके अतिरिक्त उसमें प्रत्यक्ष कोई लाभ या आनन्द दृष्टिगोचर नहीं होता। इससे तो साधारण मनुष्य केवल इतना ही समझ पाता है कि आधुनिक चित्रकला की विशेषता यही है कि उसमें सूक्ष्म रूपों

की विविधता बहुतायत से पायी जाती है तथा अजीब–अजीब तरह के रूपों, रंगों, रेखाओं का संयोजन मिलता हैं।[3]

कला सदैव अमूर्तता से सम्बन्धित रही है, क्योंकि वह कलाकार के अमूर्त भावों की अभिव्यंजना होती है। मानव ने प्रथम बार खड़िया, गेरू या कोयला हाथ में लेकर अपनी गुहा–भित्तियों पर अपने मानस में घुमड़ते हुए प्रभावों को रूपायित करने के लिये जब रेखा खींची होगी, कला उसी क्षण से अमूर्त है, क्योंकि प्रकृति में रेखा नहीं होती है। उसका निर्माण मानव ने किया है। कला कल्पित रूप की अभिव्यंजना है और रेखा द्वारा ही इसका रूपांकन होता है। खींची गयी रेखा एक संकेत का अंकन है और वह संकेत कलाकार की भावनाओं से रूपान्तरित हो हमें कला रूपों में सम्प्रेषित होता है। अमूर्त कला, रूपाकृत विषय अभिव्यक्ति से समस्त संसार की पुरातन मध्यकालीन व आकृति मूलक कलाओं के विरोधी प्रभावों का एक उत्तेजना पूर्ण रहस्यात्मक एवं पेचीदा मिश्रण है। अमूर्त कला अभिव्यक्ति व्यक्तिगत पद्धति व विलक्षण स्वरूप से यह प्रदर्शित करती है कि कला को किसी सीमा में नहीं बांधा जा सकता है। वह तो मानवीय संवेगों की स्वछंद का परिणाम है। यद्यपि जन साधारण के लिये यह चौंकाने वाली हो सकती है किन्तु कला के तत्वों व मानसिकता पर चिंतन करने वालों के लिए यह अपूर्व सौन्दर्यानन्द देने वाली है।

अमूर्तवादी एवं वस्तु निरपेक्ष चित्रकारों ने ऐसी चित्र रचनाएं रची हैं जो चित्र की स्वतंत्र एवं स्वायत्त सत्ता का हमारे सामने नये चाक्षुकीय एवं दृश्य प्रभाव प्रस्तुत करती है यहीं आधुनिक कला की परिणति है। सामान्यतः कलाकार अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त कर जो आकर्षति सर्षजित करता है वही कला यानी रूर्पकर कला कहलाती है। वह आकृति मन के भावों को एक रूपाकार में बाँधती है। उसमें नानाभाव विचरते हैं। जिसकी परिकल्पना कलाकार अपने अनार्चक्षुओं में करता है। इस अनोखे संसार में प्रवेश कर वह धन्य भी होता है तथा एक नया सौन्दर्यबोध भी उसे प्राप्त होता है। ऐसे क्षणों में कला कलाकार को एक जीवन्त स्फूर्ति देती है जिसको प्राप्त कर कलाकार एक समानान्तर संसार ही रच डालता है। कला एक ऐसा विशिष्ट माध्यम है जिसमें रेखाओं तथा रंगों के संयोग से हम अपने हृदय एवं मस्तिष्क में उड़ रहे अनोखे विचारों का दर्शा सकते हैं, अपने मन की बातों को बिना कहे ही लोगों तक पहुँचा सकते हैं। कला की उपलब्धि भी यह है कि वह निर्जीव वस्तुओं को भी जीवित कर दें और ऐसा वह कलाकार को माध्यम बनाकर करती है। कलाकार ऐसा करके एक बार फिर जी उठता है, इस तरह वह बार–बार अपने सृजन से नये जीवन रस को प्राप्त करता है, अपने को, अपनी अनुभूतियों को अनेक रूपों में रचकर ही तो वह सबमें स्वयं को बांटता है।[4]

इस प्रकार से समझ सकते हैं, रंगों के एक बेहद संवेदनशील संसार की तरह जो किसी चित्रकार का बुनियादी काम होता हैः एक ऐसे अमूर्तन की तरह जो किसी मूर्त अनुभव की ही स्मृति है, संगीत रचनाओं की तरह जिनमें हल्के से स्थान परिवर्तन से या सीमित स्वरों से कितने ही वैविध्यपूर्ण राग निर्मित होते हैं और अंततः एक काव्यात्मक कृति की तरह जिसे सभी तरह की कलाओं का उद्देश्य माना गया है। आन्तरिक सौन्दर्य को अमूर्त रूपाकारों में अभिव्यक्त करने की तीव्र इच्छा ने वस्तु के बाह्य तत्व और सादृश्य को समाप्त करके उसके भीतर स्वरूप और गुण को अमूर्तन द्वारा प्रकट किया है। जो आज की आधुनिक कला को प्रभावित करता है।

सन्दर्भ सूची

1. र०वि०साखेलकर, आधुनिक चित्रकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर पृ० 263
2. प्लेटो ने अमूर्त सौन्दर्य के विषय में लिखा है – ''वष्त्त आयत ऐसे आकार हैं जो किसी बाहय कारण से या उपयुक्तता की वजह से सुन्दर नहीं बल्कि सौन्दर्य उनकी प्रवृत्ति है। उनसे ऐसी सौन्दर्यानुभूति होती है जो इच्छारहित निर्विकार है। इस प्रकार रंगों के विशुद्ध प्रयोग में भी यह सौन्दर्य है।'' डॉ० राम विरंजन, **समकालीन भारतीय कला,** प्रकाशक निर्मल बुक एजेन्सी, विश्वविद्यालय परिसर, कुरूक्षेत्र 2003 से उद्धृत पंक्तियाँ।
3. प्रो० रामचन्द्र शुक्ल, **आधुनिक चित्रकला**, साहित्य संगम, नया 100 लूकरगंज, इलाहाबाद, 2006
4. शैली गुप्ता, 'सृजन में ही हैं कला के सूत्र और संदेश', **समकालीन कला** जून–सित० 2002 अंक 22 पृ० 57